अथ द्वितीयोऽध्याय :

सांख्ययोग

(गीता के प्रतिपाद्य तत्त्व का सारांश)

सञ्जय उवाच।
तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः।।१।। 24.1

सञ्जयः उवाच=सञ्जय ने कहा; **तम्**=उस (अर्जुन) के प्रति; **तथा**=इस प्रकार से; **कृपया**=करुणा से; **आविष्टम्**=अभिभूत; **अश्रुपूर्ण**=अश्रुओं से परिपूर्ण; **आकुल**=व्याकुल; **ईक्षणम्**=नेत्र वाले; **विषीदन्तम्**=शोकमग्न; **इदम्**=यह; **वाक्यम्**=वचन; **उवाच**=कहा; **मधुसूदनः**=श्रीकृष्ण ने।

अनुवाद

संजय ने कहा, उस करुणा और शोक में मग्न हो रहे आँसुओं से पूर्ण व्याकुल नेत्रों वाले अर्जुन से भगवान् श्रीमधुसूदन ने यह वचन कहा।।१।।

तात्पर्य

सांसारिक करुणा, शोक तथा अश्रुविमोचन—ये लक्षण उसी में प्रकट होते हैं, जो आत्मा के तत्त्व को नहीं जानता। शाश्वत् आत्मा के लिए दयाभाव ही स्वरूप-साक्षात्कार है। इस श्लोक में प्रयुक्त **मधुसूदन** शब्द गूढ़ अर्थ रखता है। भगवान् श्रीकृष्ण ने मधु दैत्य का वध किया था। इसलिए अर्जुन चाहता है कि उसे अभिभूत करने वाले अज्ञान रूपी दैत्य का भी वे विनाश करें, जो उसके कर्तव्य-कर्म के मार्ग में